# भारती

मुल्य रु. ५/-

मार्च - २०१५

## उत्तर कर्नाटक राज्य हिन्दी प्रचारक सम्मेलन में निबंध और वाक् स्पर्धा विजेता छात्राओं को पुरस्कार देते हुए प्रधानमंत्री एवम् कुलसचिव

मुम्बई हिन्दी - विद्यापीठ का मासिक मुखपत्र

# "दक्षिण भारत में बदरीनाथ"

✍ लेखक - श्री. वी. एस. कांतनवर,
रायचूर.

दक्षिण भारत के आंध्रप्रदेश में विशेष पुण्य क्षेत्र है तिरूपति क्षेत्र । उक्त तीर्थस्थान को भूवैकुण्ठ भी कहा जाता है । संपूर्ण भारत में जो महत्त्व बदरीनाथ को है, वही महत्त्व भूवैकुंठ निलय वेंकटेश को भी है । ये दोनों क्षेत्र पर्वतमालाओं के बीच विज़भित है । बदरीनाथ स्थान हिमालय की तराई में महाशीत प्रदेश है तो श्री वेंकटेश निलय कडी धूपवाले प्रदेश में स्थित है । वे दोनों वैष्णवपुण्य क्षेत्र होकर भी विभिन्न मतानुयायियों को भी आकर्षित करने वाले पुण्यक्षेत्र है ।

वेंकटगिरी निवास के विषय में एक पुराणकथा उपलब्ध है । एक बार कारण वश भृगमुनि त्रिमूर्तीयों के संदर्शन के लिए निकले । प्रथम कैलास पर्वत पर आए । परमेश्वर माता पार्वती के साथ किसी चर्चा में लगे हुए थे । उनका ध्यान मुनीवर की ओर गया ही नहीं । क्रोधोन्मत भृगु ने शाप दिया - "हे परमेश्वर । आपने मेरा अपमान किया है । अत: शाप देता हूँ की भूलोक भर में तुम्हारी मूर्ती पूजा न होकर, लिंग पूजा का विधान जारी रहे । मुनीवर ब्रह्म लोक पधारे । ब्रह्मजी सति सरस्वती के साथ किसी विषय पर चर्चा करते हुए मग्न हो चुके थे । पुन: भृगु मुनि ने क्रोध से कहा "भूलोक में तुम्हारी कही भी पूजा संपन्न न हो । पुन: मुनीवर वैकुंठ की ओर बढ़े । वहां पर भी स्वागत कार्य में विलम्ब हुआ । कोपावेश में आकर भृगु मुनी ने श्री नारायण की छाती पर लाथ मारी । भक्त पराधीन नारायण जरा भी क्रोध नहीं किया । इतना ही नहीं, मुनीवर पर अनुग्रह भी किया । इस घटना से श्री महालक्ष्मी को क्रोध आया । माता श्री लक्ष्मी ने अपने पति से कहा "जिस वक्षस्थल में मैं आवास करती हूँ, वहीं पर आपको भक्त ने पदस्पर्श किया । अत: मैं यहाँ से चली जाती हूँ । भूलोक के करवीपूर में वास करती हूँ ।" आज जिस स्थान कोल्हापूर कहते है, वही स्थान उन दिनों का करवीरपूर है । इस घटना से दु:खी होकर भगवान श्री हरी ने भूलोक में उतरे, उस जगह पर अवतार लिया, उस राह: को तिरूमल, तिरूपति कहते है । वहाँ एक वल्मीक में वास करने लगा । वह स्थान चोळ राज्य के अंतर्गत था । चोळ राजा के आधीन रहने वाली गाय राज उस वल्मीक पर अपने दूध से अभिषेक करती थी, फिर स्वस्थान आकर दूध कैसे दे सकती है ? ग्वाले ने उस वल्मिक पर कुल्हाडी चलाई । इससे रक्त की फँवारे छूट गयी । स्वयं राजा चले आए, तब वाल्मीक में स्थित श्री हरी बाहर आए और राजा से कहा

''प्रजा जनों की किसी भी गलती से राजा का संबंध है । अत: प्रथम अपराधी तुम हो । तुम्हें शाप देता हूँ कई दिनों तक तुम राक्षस रूप में रहोगे । इसके बाद श्री हरी श्रीनिवास पर्वत माला से नीचे उत्तरे । उसी स्थल में बुकुलावती नामक देवी आश्रम बनकर भगवान के आगमन के निरीक्षा में थी । बकुलावती ने श्रीहरी का स्वागत किया । श्री हरी ने उसी अश्रम मे आश्रय किया ।

एक दिन श्रीहरी घोड़े पर सवार होकर घने जंगल में शिकार के लिए आए । उसी समय राजपुत्री पद्मावती से भेंट हुई । पद्मावती आकाश राजा की पुत्री थी । उसमें प्रेम अकुर हुआ । आगे चलकर पद्मावती तथा श्रीनिवास कल्याणोत्सव वैभव के साथ संपन्न हुआ । उपर्युक्त श्रीनिवास कल्याण भक्तजनों के लिए एक महत्त्वपूवर्ण आराधना कहा जाता है ।

संस्कृत मे 'वें' अर्थात 'विघ्न', कठती अर्थात 'दूर करना' इन्ही शब्द मूलों से वेंकट, वेंकटेश आदि नाम प्रचलित है । जो वेंकटेश का स्थान है, उसे तिरूमल तिरूपति भी कहा जाता है ।तिरूपति विश्वविद्यालय भारत-भर में प्रसिद्ध है । उस जगह सात पहाड़ों का सिलसिला होने से उसे सप्तगिरी भी कहते है । उपर्युक्त स्थान प्रेक्षणीय है । मनुष्य मात्र को उद्धार करने की जगह लक्ष्मी-नारायण निवास है । अनेक भारतीय यहाँ नतमस्तक हो जाते है ।

''धर्मो रक्षित: रक्षित:''

❖ ❖ ❖

## ''प्रयत्न''

देखो उपर गगन में उन पंछीयों को,
जो प्रयत्नशील रहते है सदा,
उस आसमान को चुमने को ।

क्या तुमने कभी प्रयत्न किया,
अपनी उद्देशपूर्ण मंजील पाने को,
कदाचित नहीं !
क्योंकि तुमने अपने अनमोल जीवन को,
कभी टटोला ही नही ।

बस किसी बैसाखियों के सहारे चलते रहे
पता नही क्यो जनम लिया ?
ना ही कोई जीने का उद्देश ।

पशु-पक्षी भी जीते है, चल देते है,
उठ जाग ये इन्सान, उठ जाग,
जवानी आधी गुजर गई,
न कोई तमन्ना ना कोई उद्देश,
तुमने ये कैसी जिंदगी है पाई ?

जरा उपर देखो उन पंछियों को,
आकाश को न कभी छुपायेंगे ।
पर प्रयत्नशील रहेंगे सदा,
जिन्दगी में अपने स्नेही कुछ कर दिखलाने को ।

❖ ❖ ❖

✍ आचार्य डॉ. डी. एम. आर्य 'स्नेही',
हुमनाबाद.